

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
(पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

सत्रीय कार्य
2025

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)



अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.) सत्रीय कार्य 2025

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'सिंधी-हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (पी.सी.एस.एच.एस.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ-साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। आठ पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के छह पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा और दो पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित हैं। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग-अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार है :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि*	
	जनवरी 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.-001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-041 सिंधी-हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-042 सिंधी-हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-043 अनुवाद सिद्धांत और सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद परंपरा	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-044 अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि : सिंधी-हिंदी-सिंधी का संदर्भ	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-045 हिंदी-सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026

* सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर

सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें। प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, सिंधी-हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ-साथ सिंधी और हिंदी भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। इसके अलावा अनुवाद संबंधी सिद्धांतों, प्रक्रिया और प्रविधि से भी परिचित कराते हुए इन भाषाओं में अनुवाद की परंपरा से अवगत कराया गया है।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

- 1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।
- 2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर-पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर-पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।
- 3) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।
- 4) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या :
	नाम :
	पता :
	
पाठ्यक्रम कोड :	
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	हस्ताक्षर :
सत्रीय कार्य कोड :	तिथि :

- 5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
- 6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।

- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ-साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। मलयालम और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की-सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन-क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

- आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।
- वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।
- उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।
- उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।
- आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
- उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।
- अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग-अलग लिखें।
- प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।
- सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**
- अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।
- यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि : सिंधी-हिंदी-सिंधी का संदर्भ (एम.टी.टी.-044)
(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.-044
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.-044/एएसटी/
(टी.एम.ए.)/2025

पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए।

- 1 अनुवाद-प्रक्रिया से आप क्या समझते हैं? अनुवाद की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10
- 2 प्रविधि से क्या अभिप्राय है? अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों का सोदाहरण वर्णन कीजिए। 10
- 3 अनुवाद मूल्यांकन क्या है? अनुवाद मूल्यांकन की विभिन्न पद्धतियों की व्याख्या कीजिए। 10
- 4 अनुवादक के द्वारा निभाए जाने वाले दायित्वों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। 10
- 5 रूपांतरण शब्द-प्रयोग की व्याप्ति पर विचार करते हुए अनुवाद में रूपांतरण के संदर्भ स्पष्ट कीजिए। 10
- 6 सबटाइटलिंग से क्या अभिप्राय है? सबटाइटलिंग में अनुवाद की तकनीक और चुनौतियों पर प्रकाश डालिए। 10
- 7 मशीनी अनुवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए और भारत इसके विकास का लेखा-जोखा प्रस्तुत कीजिए। 10
- 8 कोश निर्माण की आवश्यकता और सिंधी के विशेष संदर्भ में कोश निर्माण प्रक्रिया पर विचार कीजिए। 10
- 9 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण संबंधी विभिन्न तकनीकों की चर्चा कीजिए। 10
- 10 निम्नलिखित पर लगभग 250-250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 5x2=10
(क) देश विभाजन-पश्चात सिंधी पारिभाषिक शब्दावली का विकास
(ख) लिप्यंतरण और लिप्यंकन
